International Journal of Applied Research 2017; 3(6): 480-487

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(6): 480-487
www.allresearchjournal.com
Received: 22-04-2017
Accepted: 24-05-2017

डॉ. प्रदीप कुमार
असिसटैंट प्रोफैसर, एम.आर सरकारी कॉलज, फाजिलका, पंजाब, भारत

Correspondence
डॉ. प्रदीप कुमार
असिसटैंट प्रोफैसर, एम.आर सरकारी कॉलज, फाजिलका, पंजाब, भारत

बीकानेर राज्य के अन्दर नए चक्क बनाना व गंग नहर का निर्माण करना

डॉ. प्रदीप कुमार

सारांश
राजपूताने के राज्यों में विशाल रेतीला बीकानेर जो कि भारतीय मरूस्थल के बीचों बीच था। यह शायद भारत के गर्म इलाकों का सबसे सूखा एवं निर्जल क्षेत्र था। यहॉ वर्षभर में औसत वर्षा 12 इंच होती थी और कहीं–2 इस से भी कम होती थी। यहॉ इस क्षेत्र में कोई नदी इसमें से नहीं बहती । पानी के स्रोत बहुत कम और इन रेत के टीलों के बीच न टूटने वाली एक उदासी थी, जो कि इस बंजर दृश्य को ओर ज्यादा डरावना बनाती थी। सदियों से बीकानेर पर राज करने वालों की यह इच्छा रही कि पानी का कोई स्रोत ड्रूँढा जाऐ, जो इस बंजर मरूस्थल को हरे–भरे खेतों में बदल दे।

कूटशब्दः बीकानेर राज्य, नए चक्क बनाना, गंग नहर

प्रस्तावना
राजपूताने के राज्यों में विशाल रेतीला बीकानेर जो कि भारतीय मरूस्थल के बीचों बीच था। यह शायद भारत के गर्म इलाकों का सबसे सूखा एवं निर्जल क्षेत्र था। यहॉ वर्षभर में औसत वर्षा 12 इंच होती थी और कहीं–2 इस से भी कम होती थी। यहॉ इस क्षेत्र में कोई नदी इसमें से नहीं बहती । पानी के स्रोत बहुत कम और इन रेत के टीलों के बीच न टूटने वाली एक उदासी थी, जो कि इस बंजर दृश्य को ओर ज्यादा डरावना बनाती थी। सदियों से बीकानेर पर राज करने वालों की यह इच्छा रही कि पानी का कोई स्रोत ड्रूँढा जाऐ, जो इस बंजर मरूस्थल को हरे–भरे खेतों में बदल दे। भारत सरकार ने इस बात की कोई परवाह नहीं की थी, चाहे 1899–1900 का सूखा अथाह दुख लेकर आया था, फिर भी इसका अप्रत्यक्ष एक फायदा भी हुआ कि यह एक इतनी विशाल त्रासदी थी, कि जिसने भारत सरकार को जगाया था। इस समस्या के सामने लार्ड कर्जन ने अपनी बुद्धिमता व दुरदृष्टिता को उजागर किया था। महाराजा ने इस घाटे को बड़ा चौकन्ना होकर (गंभीरता) से महसूस किया। अब उन्होनें कहा कि प्रत्येक तरह से इस बात का फैसला करते हुए कि बीकानेर में सूखा पड़ता है और यहॉ की गुणवता की जमीन जिस को पानी चाहिए। 3,300 स्कूऐर मील तक उत्तरी पश्चिमी क्षेत्र को सतलुज के पानी से सींचा जा सकता है। जो पंजाब और इसके इर्द–गिर्द के लोग यह महसूस करते हैं, कि भावलपुर से ज्यादा बीकानेर को ज्यादा पानी की जरूरत है और जहॉ तक तटट्रीय क्षेत्र के राज्य के अधिकारों का प्रश्न हैं, महाराजा ने यह कहा कि पानी का इस्तेमाल इस प्रकार हो कि पूरे भारत के फायदे को सामने रखा जाऐ।
महाराजा की सरकार ने सब से पहले तो ओर लोगों का गैर कानूनी तरीके से यहॉ बीकानेर में आकर रहना व घर बनाना बंद कर दिया था। अगर कदम यह उठाया गया कि भूमि को विभिन्न–2 हिस्सों में बॉटा जाए, क्योंकि खेतीबाड़ी के लिए अलग भूमि को एक हिस्से में रखा गया और बंजर वाली भूमि को अलग हिस्से में रखा गया। फिर खेती–बाड़ी वाली उस जमीन से उन लोगों को हटाकर उनको बंजर वाली भूमि पर रहने के लिए भेजा जाऐं । राज्य में वह बंजर भूमि ली जिस पर नए आए लोगों ने खेती करने की कोशिश नहीं की थी। इस कोशिश में किसी के साथ कोई अन्याय न हो ।
राजपूताने के राज्यों में विशाल रेतीला बीकानेर जो कि भारतीय मरूस्थल के बीचों बीच था। यह शायद भारत के गर्म इलाकों का सबसे सूखा एवं निर्जल क्षेत्र था। यहॉ वर्षभर में औसत वर्षा 12 इंच होती थी और कहीं–2 इस से भी कम होती थी। यहॉ इस क्षेत्र में कोई नदी इसमें से नहीं बहती। पानी के स्रोत बहुत कम और इन रेत के टीलों के बीच न टूटने वाली एक उदासी थी, जो कि इस बंजर दृश्य को ओर ज्यादा डरावना बनाती थी। सदियों से बीकानेर पर राज करने वालों की यह इच्छा रही कि पानी का कोई स्रोत ड्रूँढा जाऐ, जो इस बंजर मरूस्थल को हरे–भरे खेतों में बदल दे। महाराजा डूँगर सिंह ने 1885 में इस क्षेत्र की ओर ध्यान देने की ईच्छा प्रगट की थी।

1898–99 के भयानक सूखे ने महाराजा गंगा सिंह जी को इस बात के लिए मना लिया कि अपने राज्य के पहले ही वर्ष में उन्हे इस बात का ध्यान रखना है कि बीकानेर का भविष्य पानी के स्रोतों पर निर्भर करता है, जो यहॉ खेती को प्रोत्साहन दे। उन्होनें मन से और श्रद्धा से कार्य करना शुरू किया कि वह अपने इस आशा को पूरा कर सके। अपने राज्य को पानी से सींचने के लिए और यहां की कुछ भूमि को खेती हर धरती में तबदील कर सके।

सूखे के दिनों में कर्नल डनलोप समिथ, जो कि सूखे के फेमाईन कमिश्नर (Famine Commissioner) थे, उन्होने बीकानेर के लोगों का और जानवरों का भयानक दुख देखा और उन्होनें एक बहादुरी वाली है। भारत सरकार ने इस बात की कोई परवाह नहीं की थी, चाहे 1899–1900 का सूखा अथाह दुख लेकर आया था, फिर भी इसका अप्रत्यक्ष एक फायदा भी हुआ कि यह एक इतनी विशाल त्रासदी थी, कि जिसने भारत सरकार को जगाया था। इस समस्या के सामने लार्ड कर्जन ने अपनी बुद्धिमता व दुरदृष्टिता को उजागर किया था।[1] उन्होनें इस बात की पहचान कि सूखे का यह दुश्य तब तक समाप्त नहीं हो सकता जब तक कि वह कभी–2 होने वाले और कम होने वाले मानसून पर निर्भर रहेगा। नहरी पानी की सिंचाई ही एक ऐसा सही तरीका था, कि किसान के लिए जिस भारत के बहुत से बड़े हिस्से को सूखे के भयानक डर से बचाना था।

आज तक भारत को सिंचाई की क्षेत्रीय और राज्य की दृष्टि से देखा गया। तंग सोच छोटे अफसरों की राष्ट्रीय भक्ति और भारत सरकार की और से सोच का न बढ़ पाना, भारत को एक अच्छी नीति न दी। भारत के कल्याण के लिए लार्ड कर्जन के महान सूखे के तजरबे ने उसे इस बात के लिए तैयार किया कि सिंचाई की समस्या को राष्ट्रीय स्तर पर देखा जाऐ और उन्होनें एक Irrigation Commissioner बनाया जिस को सारा यह कार्यभार संभाला गया कि वह ऐसी योजना बनाए कि भारत की नदियॉ का पानी पूरी तरह और बिना गवाऐं इस्तेमाल किया जा सके। इस तरह भारत सरकार ने भारत के पानी के हक्क की जांच पड़ताल की और फैसला किया कि पानी को इस तरीके से इस्तेमाल किया जाऐगा कि ज्यादा से ज्यादा लोगों को फायदा होगा। बदकिस्मती से लार्ड कर्जन वहॉ से लौट कर पहले ही चले गए। जिससे पहले कि बीकानेर राज्य की सिंचाई की परियोजनाऐं शुरू होती और जिससे राज्य की कई अन्य मुश्किले भी दूर होती।

बीकानेर एक नदियों का राज्य नहीं था और भावलपुर जो कि सतलुज के पानी का एक मालिक था, उसने इस बात का विरोध किया कि बीकानेर सतलुज के पानी में अपनी भागीदारी रखे। 1912 में एक निश्चित योजना बनी तो भावलपुर कौंसिल ने इस बात का विरोध किया कि यह योजना उस समय की पानी के नदियों को बुरी तरह प्रभावित करेगी, और इसके साथ ही यह योजना भावलपुर क्षेत्र को ही सिंचाई के लिए [2] पूरा था और बीकानेर को इस से जोड़ने से भावलपुर के लोगों के हक उपर बुरा प्रभाव डालेगा। अगर इसका कुछ भी हिस्सा बीकानेर राज्य को चला जाता है तो, 1905 की योजनाओं ने यह विचार किया कि ऊॅचाई पर डैम बनाया जाऐ और वह बीकानेर के बहुत से हिस्से की सिंचाई करेगा और पानी भी देगा। भावलपुर कौंसिल ने जिद्द के साथ विरोध किया कि यह योजना भावलपुर राज्य के विरूद्ध थी और अपने आप को इस योजना से अलग रखने की प्रार्थना भी की थी और यह सुझाव दिया कि एक तिहाई पानी जो बीकानेर का सपलाई किया जाऐगा इससे उनका कोई कानूनी हक नहीं होगा। भावलपुर कौंशिल के प्रधान ने यह कहा कि मुझे यह बात कहने की आज्ञा दी जाऐं, कि मैं यह कहूॅ कि सतलुज का पानी भावलपुर की सिंचाई के लिए पूरा नहीं और बीकानेर जैसे राज्य को इसका पूरा अधिकार देना सरासर गलत होगा और मुश्किल तब हुई जब भावलपुर राज्य को एक राजा नेतृत्व दे रहा था। कौंशिल ने इस बात का फायदा उठाया उन्होनें कहा कि भावलपुर का राजा एक न आवाज पैदा करने वाला बच्चा है और डेविड और गोलियत की तश्वीर को पूरा करते हुए उन्होनें कहा कि उम्र से छोटे नवाब का प्रतिद्वंदी बीकानेर का महाराजा है जो कि पूरी शक्ति का मालिक है और वह इस फैंसले को प्रभावित कर सकता है। महाराजा ने भावलपुर के इस विचार को गलत ठहराया। बीकानेर के प्रतिनिधियों ने इस समस्या को ओर ऊपर पहुॅचाया।[3] ब्रिटिश अफसरों ने इस तथ्य को भी गलत ठहराया कि भावलपुर के बहुत ज्यादा सींचे हुऐ खेत ख्लयान थे और कहा कि भावलपुर का जो यह विरोध था वह गलत था। प्रत्येक नई योजना के साथ भावलपुर ने अपने विरोध को नई ताकत के साथ बढ़ाया और प्रत्येक बार अपने अधिकार को ऊॅचा रखा। भावलपुर के विरोध के बाद 1905 की जो योजना थी जिसने बीकानेर के 18 लाख एकड़ क्षेत्र को सींचना था, 1913 में उसे 6,40,000 एकड़ कर दिया और 1914 में 5,00,000 कर दिया।

श्रीमान् जेनरल महाराजाधिराज, राजराजेश्वर, नरेन्द्रशिरोमणि महाराजा श्री सर गंगासिंहजी बहादुर
जी.सी.एस.आई., जी.सी.आई.ई., जी.सी.वी.ओ., जी.बी.ई., के.सी.बी., ए.डी.सी., एल.एल.डी., डी.सी.एल.

महाराजा ने इस घाटे को बड़ा चौकन्ना होकर (गंभीरता) से महसूस किया। अब उन्होनें कहा कि प्रत्येक तरह से इस बात का फैसला करते हुए कि बीकानेर में सूखा पड़ता है और यहॉ की गुणवता की जमीन जिस को पानी चाहिए। 3,300 स्कूऐर मील तक उत्तरी पश्चिमी क्षेत्र को सतलुज के पानी से सींचा जा सकता है। जो पंजाब और इसके इर्द–गिर्द के लोग यह महसूस करते हैं, कि भावलपुर से ज्यादा बीकानेर को ज्यादा पानी की जरूरत है और जहॉ तक तटट्रीय क्षेत्र के राज्य के अधिकारों का प्रश्न हैं, महाराजा ने यह कहा कि पानी का इस्तेमाल इस प्रकार हो कि पूरे भारत के फायदे को सामने रखा जाऐ।[4]

1903 में महाराजा ने जिस महान सिंचाई का सपना देखा था। उन्होनें चीफ इंजीनियर मिस्टर ऐ. डब्लयू.ई. स्टेनडली जो कि बहुत ही बुद्धिमान इंजीनियर थे की सहायता से उन्होनें सतलुज से बीकानेर क्षेत्र को सींचने की संभावनाओं का प्रदर्शन किया। उनकी सलाह को सर स्वीनटन जैकोब ने बहुत सहारा दिया, जो कि उस समय राजपूताना उन्हीं रास्तो पर चल रही थी। 1905 में मिस्टर आर.जी. कैनेडी ने पहला सतलुज वैली प्रौजैक्ट बनाया। महाराजा ने शिमला में जाकर लार्ड कर्जन के सामने अपना पक्ष रखा। वह वायसराय के स्वभाव के बारे में पूरा नहीं जानते थे

और उन्हें यह पता था कि बीकानेर के अधिकार में उनकी किसी बात का पंजाब में अफसरशाही विरोध करेगी। उन्होनें आशा की अगर वायसराय उनके प्रति सहानुभूति दिखाऐ तो लार्ड कर्जन को मनाया जा सकता है कि वह तकनीकि तथ्यों को सामने रखते हुए महाराजा इस विश्वास के साथ शिमला गऐ कि वह वायसराय और पंजाब सरकार को समझा सकेंगे। पंजाब सरकार व भारत सरकार के विरोध से परे हट कर महाराजा ने लार्ड कर्जन की नीति का धन्यवाद किया।[5] जिस में बीकानेर के बहुत से हिस्से को सहायता मिली। महाराजा इस उम्मीद के साथ वापस लोटे कि उनकी चिरसंचित इच्छा पूरी होगी।

भावलपुर का विरोध एक बहुत बड़ी रूकावट था, लेकिन पंजाब के गवर्नर सर डेनजिल ईबीटसन ने यह नीति बनाई कि पानी भारत के लोगों के लिए सही ढंग से इस्तेमाल हो जिस में किसी भारतीय राजा या किसी ब्रिटिश क्षेत्र को कोई गल्त फायदे की नीति न हो बीकानेर को एक भागीदार बनाया जाऐ। सतलुज वैली सिंचाई परियोजना का फैसला 1906 में हुआ। 1912 में एक निश्चित योजना बनाई गई। महाराजा 1905 में वापिस आऐ बड़ी आशा के साथ कि यह कार्य सात आठ वर्ष में ही हो जाऐगा, लेकिन यही देरी चिंता और परेशानी का सबब बनी। 1912 में जब एक योजना को मानयता मिली, उन्हे लगा कि अब यह कार्य आगे बढ़ेगा लेकिन फिर दोबारा उनकी आशाओं पर पानी फिर गया था। उस समय भारत सरकार को कोई जल्दी नहीं थी। एक लम्बी बहस इस योजना सम्बन्धी फायदे और नुक्सान पर हुई थी। पंजाब सरकार ने भी असहानुभूति का रवैया अपनाया। जहॉ तक भावलपुर का सवाल था, जैसे कि पहले ही कहा गया है कि प्रत्येक वर्ष में उनका रवैया सख्त हो जाता था। इस कार्य के लिए वर्षो–वर्ष व्यतीत हो गए थे और यह कार्य शुरू न हो सका। उस समय के दौरान युद्ध लग चुका था और सभी महॅगी परियोजनाओं को परै रख दिया गया या, नजर अंदाज कर दिया गया था। 4 सितम्बर 1920 को 15 वर्ष के पश्चात् जब कि इस योजना को सिद्धांतिक रूप से स्वीकृति मिली। जब कि सर माईकल उडवाईर के उदार स्वभाव से और भारत सरकार के द्वारा एक समझौता हुआ। पंजाब, भावलपुर और बीकानेर के बीच जिस के द्वारा तीनों सरकारों ने इस योजना को निश्चित रूप से स्वीकारा यह बीसवीं परियोजना थी। जिस में सैक्रेटरी ऑफ स्टेट को मनजूरी के लिए भेजा गया। जब अंतिम योजना सैक्रेटरी ऑफ स्टेट के सामने पहुॅची तो महाराजा ने तरीके ढूंढने शुरू किए कि इस योजना को शुरू किया जाऐ[6]। जब एक पूरा खाका तैयार हुआ तो इस स्कीम (योजना) में आने वाली समस्याऐं उजागर हुई। महाराजा की सेवा में एक ऐसा व्यक्ति था जिस के लिए समस्याऐं जीतने के लिए बनी थी और उसे यूं लगा कि वह यह कार्य करके उस राज्य को अति लाभ पहुॅचाऐगा जिस की वह सेवा कर रहा था।

मिस्टर जी.डी. रूडकिन, जो रेवैन्यू कमिश्नर थे और बाद में 1912 में महाराजा की सरकार के रैवेन्यू मैंबर बने थे, वह एक उत्कृष्ट व्यक्तित्व के मालिक थे । उनमें अथाह शक्ति थी, महान सोच थी और उन्होनें इस सिंचाई परियोजना पर खास ध्यान दिया, जो समस्याऐं महाराजा और रेवैन्यू मंत्री को झेलनी पड़ी वह बड़ी खास तरह की थी उस राज्य में वह क्षेत्र जिस की सिंचाई करनी थी, उसमें हल्की दौमट मिट्टी थी और पानी 180 से 225 फुट नीचा था। औसतन वर्षा दक्षिण पश्चिम में 6 ईंच थी और जैसे–2 हिमालय से दूरी बढ़ती गई यह औसत घटती गई । भूमि उपजाऊ थी, लेकिन सूखा मरूस्थल पानी को पी जाता था।[7] सेम के डर से ब्रिटिश इंडियन ट्रैटरी में जहां से 71 मील नहर न निकलना था। उसको ईंटों से पक्का भी करना था। जिससे खर्चा और बढ़ा था। जमीन लेने की भी समस्या थी, चाहे उस क्षेत्र में कोई जागीरी व्यवस्था नहीं थी, परन्तु बहुत सी जमीन वैसे ही ले ली गई थी। बहुत से पंजाब के लोग थे जिन्हें पता चल गया था कि यह नहर योजना शुरू हो रही है । उन्होनें वहॉ जमीने खरीदनी शुरू कर दी थी और 1904 में जो क्षेत्र 4 करोड़ पॉच लाख एकड़ था, वह 1909 में और 1910 में 70 हजार एकड़ रह गया था। 1912 में राज्य के लिए बहुत ही कम क्षेत्र बचा। इस छोटी सोच की नीति से राज्य को बहुत समस्याऐं आई और पैसा भी नष्ट हुआ था। जब परियोजना पूरी होने को आई तो महाराजा और सरकार को यह समस्या आई कि कैसे इस Irrigation स्कीम (परियोजना) की कीमत चुकायी जाऐ और इन लोगों से निपटा जाऐं । समस्याऐं और ज्यादा बढ़ गई । नए लोगों ने वहॉ आकर रहना शुरू कर दिया और अपने घर व कलोनियॉ बना ली थी और उन्हें कानूनी तौर पर हटाना पड़ा। दूसरी और यह भी गल्त था कि राज्य इन Irrigation स्कीम (परियोजना) को पूरी तरह फायदेमंद बना सकता है। उन से जमीन की ज्यादा कीमत लेकर जो उन्होनें थोड़ी देर पहले इन लोगों से हथयाई (छीनी) थी, उनके पास कोई भी मालिकाना अधिकार नहीं था।

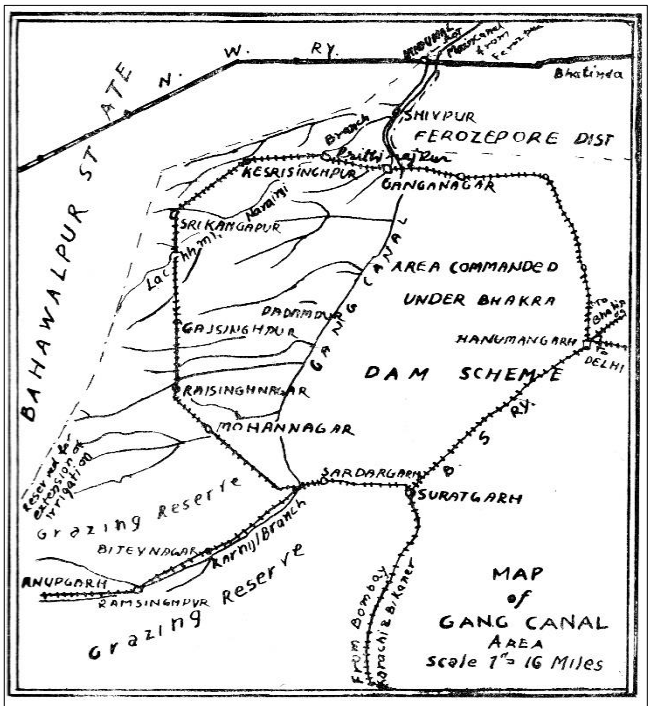

Map of Gang Canal

महाराजा की सरकार ने सब से पहले तो ओर लोगों का गैर कानूनी तरीके से यहॉ बीकानेर में आकर रहना व घर बनाना बंद कर दिया था। अगर कदम यह उठाया गया कि भूमि को विभिन्न–2 हिस्सों में बॉटा जाए, क्योंकि खेतीबाड़ी के लिए अलग भूमि को एक हिस्से में रखा गया और बंजर वाली भूमि को अलग हिस्से में रखा गया। फिर खेती–बाड़ी वाली उस जमीन से उन लोगों को हटाकर उनको बंजर वाली भूमि पर रहने के लिए भेजा जाऐं । राज्य में वह बंजर भूमि ली जिस पर नए आए लोगों ने खेती करने की कोशिश नहीं की थी। इस कोशिश में किसी के साथ कोई अन्याय न हो । महाराजा ने आप खुद निजी तौर पर मिस्टर रूडकिन को यह कार्य सौपा कि वह लोगों का यहॉ मालिकाना अधिकार दें। मिस्टर रूडकिन ने यह नीति बनाई कि पूरे हालात का जायजा लिया जाऐ कि वह लोग जो खेती–बाड़ी कर रहे थे कि वह शुरू से ही वहॉ रहते थे, किस तरीके से उन्होनें भूमि को हथियाना और उनके साथ दयालुता का व्यवहार किया जाऐं ।[8] इस स्कीम (योजना) को काफी सफलता मिली और वहॉ की स्टेट और जो लोग वहां रहते थे उनके बीच एक समझौता हुआ। जिन लोगों के पास बंजर भूमि थी उनको उपजाऊ भूमि दे दी गई थी। अगला प्रश्न था कि इस प्रोजैक्ट पर खर्चा कहॉ से किया जाऐं मिस्टर रूडकिन का पहला अस्टीमैंट था, 2,01,21,121 रूपया, अगला अस्टीमैट 3 करोड़ तक

पहुॅच गया था। इसके साथ ही 157 मील लम्बी, जो लूप लाईन बनानी थी उसका खर्चा, मण्डी, स्कूल, हस्पताल, पुलिस स्टेशन और बाकी संस्थाऐं बनाने का खर्चा भी कम नहीं था। यह 5 वर्ष में खर्चा बढ़ कर 4 करोड़ तक पहुॅच गया था जो किसी भी सरकार के लिए चुका पाना असम्भव हो गया था। किसी भी राज्य के लिए इन स्कीमों (योजनाओं) को विति सहायता देना मुश्किल था और बाहर से लोन लेना मुशिकल था। महाराजा को इस बात का पता था कि अगर भारत सरकार से पैसे की सहायता ली गई तो उससे राज्य की आन्तरिक अर्थ व्यवस्था में हस्तक्षेप होगा। इतना बड़ा खर्चा असम्भव था। नहरी क्लोनी में जो फालतू जगह थी उसको बेच कर भी इतना पैसा इकट्ठा नहीं हो सकता था। महाराजा गंगा सिंह की सरकार ने हिम्मत नहीं हारी राज्य का प्रभाव इतना था कि जब लोगों को पता चला कि महाराजा की सरकार को लोन चाहिए तो प्रदेश से और बाहर से लोगों ने पैसा उधार देना शुरू किया और यह रक्म 2 करोड़ 36 लाख तक पहुंच गई थी।[9] यह बड़ी खास बात थी कि महाराजा को नहर को पक्का करने के लिए जिस पत्थर की जरूरत पड़ी उसके लिए बीकानेर रेल्वे ने भी सहायता की थी, क्योंकि राज्य गंग नहर के रेलवे ने सहायता की थी 200 मील से पत्थर लाने के लिए महाराजा ने बाहर से पत्थर लाकर पैसा नष्ट नहीं किया।

प्रशासन और प्रशासक का प्रभाव इतना था कि भारत में कोई भी खेती करने वाली जमात इतनी चतुर व मेहनती नहीं थी जितने कि पंजाब के सिक्ख लोग थे । यह सिक्ख लोग बहुत ही मेहनती थे और बहुत ही अच्छी पैदावार भी करते थे । यह पंजाब के सिक्ख लोगों की जमात कभी भी अपने पैसे को दाव पर नहीं लगाती थी। यह एक आम धारना है कि ब्रिटिश क्षेत्र में जो किसान है वह बिना मजबूरी के भारतीय क्षेत्र में नहीं जाते है। बीकानेर क्लोनी का तर्जबा हमें यह विश्वास दिलाता है कि राजा लोगों की भलाई के बारे में सोचता भी है, तो भारतीय क्षेत्र ब्रिटिश इंडिया के किसानों को अपनी ओर आकृषित करता है।[10]

बीकानेर राज्य मरूभूमि होने के कारण वहां वर्षा का औसत अनुपात अधिक नहीं है। कुएं थोड़े और गहरे होने से खरीफ के अतिरिक्त रबी की फसल उत्पन्न नहीं होती, जिससे अकाल के समय प्रजा को बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। अतः महाराजा साहब ने अपने राज्य में कृषि कार्य बढ़ाने के लिए सतलुज नदी से एक नहर लाने का विचार कर अंग्रेज सरकार से लिखा–पढ़ी फिर प्रारंभ की थी। अंत में पंजाब के फिरोजपुर नगर से बीकानेर राज्य में सतलुज नदी से नहर लाने की अंग्रेज सरकार ने स्वीकृति दी, जिसका अंतिम पत्र व्यवहार ई.सं. 1920 ता0 4 सितंबर (वि.सं. 1977 भाद्रपद वदि 6) को होकर नहर लाना स्थिर हो गया था।[11]

इस नहर का कार्य बड़ा ही व्यवसाध्य था। इसे लाने में बीकानेर राज्य का पौने तीन करोड़ रूपया व्यय होने का अनुमान किया गया, जिसकी प्राप्ति का साधन नहर के आस–पास की ज़मीन की बिक्री का मूल्य और नज़राने की रकम थी, जिसका अनुमान लगभग छः करोड़ रूपये का किया गया था। इसके अतिरिक्त इस नहर के लाने से राज्य को वार्षिक 32 लाख रूपये तो केवल आबपाशी से, 20 लाख रूपये सूद से तथा रेल्वे, सायर, स्टाम्प इत्यादि मिलाकर 75 लाख रूपये प्रति वर्ष आय बढ़ाने का अनुमान किया गया। फलतः बीकानेर राज्य के उत्तरी भूभाग की पैमाईश इत्यादि होकर नकशे और तखमीना बनने के बाद ई.सं. 1925 ता0 5 दिसम्बर (वि.सं. 1982 पोष वदि 5) को बीकानेर राज्य की सीमा में नहर लाने का शिलान्यास स्वयं महाराजा साहिब ने अपने हाथों से किया। यह नहर गंग नहर के नाम से प्रख्यात हुई थी इस नहर के समीपवर्ती भूभाग में दूर–दूर तक कृषि–कर्म आरंभ हुआ जिससे उधर की आबादी दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी और श्री गंगानगर इत्यादि बड़ी–2 व्यापारिक मंडियॉ भी बन गई थी।[12]

जनवरी मास के अंतिम सप्ताह में भारत का वायसराय और गवर्नर जनरल लार्ड इर्विन बीकानेर पहुॅचा। ता0 29 जनवरी (वि. सं. 1983 माघ वदि।।) को उसके आगमन के उपलक्ष्य में लालगढ़ में भोज हुआ। उस समय वायसराय ने अपनी वकृत्ता में बीकानेर–यात्रा आनंदपूर्वक होने एवं महाराजा साहब से सामयिक कार्यो का उल्लेख करते हुए इनके उत्तम शासन तथा यूरोपीय महायुद्ध, संधि कान्फ्रैंस तथा नरेन्द्र–मंडल में होने वाले कार्यो की बहुत–2 सराहना की थी। फिर वह गजनेर गया, जहॉ की सुन्दर झील और प्राकृतिक शोभा को देखकर वह बड़ा प्रसन्न हुआ। उसे आबपाशी के कार्यों में अत्यन्त अनुराग था। बीकानेर जैसे निर्जल प्रदेश में महाराजा–द्वारा असाधारण उन्नति एवं आबपाशी के साधन बढ़ाये जाने से उसको बड़ी प्रसन्नता हुई।[13] फलतः महाराजा और उक्त वायसराय में प्रगाढ़ मैत्री हो गई और इसके पीछे भी वह कई बार बीकानेर गया। शासन–सुधार इत्यादि गंभीर विषयों में उसको महाराजा की उचित सलाहें बड़ी लाभकारी प्रतीत हुई।

गंग नहर के निर्माण का महत्वपूर्ण कार्य वि.सं. 1984 (ई.सं. 1927) में पूरा हो गया। अतएव महाराजा साहब ने उक्त नहर का अक्तूबर महीने में उद्घाटन करने का निश्चय किया। निमंत्रित किए जाने पर भारत के कई राजा–महाराजा भी इस उत्सव में सम्मिलित हुए थे। कार्तिक सुदि 1(ता. 26 अक्तूबर) को लॉर्ड इर्विन–द्वारा गंग नहर का उद्घाटन हुआ। इस शुभ अवसर पर महामना पंडित मदनमोहन मालवीयॉ भी उपस्थित थे और वरूण–पूजा इत्यादि धार्मिक कृत्य उनकी सम्मति के अनुसार हुए थे।

वि.सं. 1986 (ई.सं. 1929) में पूर्व जमींदारों के ''एडवाइजरी बोर्ड'' की संख्या एक से बढ़ाकर दो कर दी गई थी। एक सदर डिविजन और दूसरा श्री गंगानगर डिविजन के लिए । पहले में सदस्यों की संख्या 20 रखी गई और दूसरे में 15 रखी गई थी।[14] लार्ड ईरविन ने महाराजा श्री गंगा सिंह जी के नाम पर इस नहर का नाम 'गंग नहर' रख दिया और इस का उद्घाटन कर दिया गया। इस मौके को एक अच्छे उत्सव की तरह मनाया गया। राजा जार्ज पंचम भी बहुत खुश हुआ और उन्होनें महाराजा गंगा सिंह को यह संदेश भेजा कि मुझे आप का टैलीग्राम पाकर बहुत ही खुशी हुई कि जो सपना आप ने लम्बे समय से संझौया था वह पूरा हुआ और अगले सप्ताह वायसराय ने इस गंग नहर को खोल दिया मैं इस यादगारी प्राप्ति पर आप को बहुत–2 बधाई देता हूॅ। उन सब कोशिशों ने जिन्होनें प्रत्येक कठिनाईयों को जीता आप के क्षेत्र को सिंचाई देने के लिए। मैं आप को विश्वास दिलाता हूॅ कि मैं आने वाले समय में आप की हर सम्भव सहायता करूगा, एक ऐसे कार्य में जो कि इस राज्य के लिए आवश्यक है।[15]

गंग नहर का उदघाटन

बहुत से राजा और महाअनुभव दूर–2 से इस महान कार्य के अवसर के पूरा होने पर आऐ थे। राठौड़ राजा बहुत संख्या में आऐ अपनी दुश्मनी भूल कर जोधपुर के राजा अपने भाई के साथ बधाई देने के लिए आऐ थे। अगर इतिहासिक कल्पना पीछे जा सकती है तो राओ जोधा जी के दो उत्तराधिकारी धन्यवाद के साथ यह याद कर सकते है उस दिन जब राव बीका जी ने अपना पुस्तैनी घर छोड़ा अपने लिए एक साम्राज्य (राजधानी) बनाने के लिए।[16] यह महान जोखिम भरा कार्य 26 अक्तूबर 1927 को पूरा हुआ जब एक हजार सक्येर मील का क्षेत्र जिस की स्थापना राव बीका जी ने की थी, एक सूखा पड़ा मरूस्थल हरे–भरे खेतों में बदल गया। किशनगढ़ के महाराजा और राजा आफ सीतामाऊ, भी वहां उपस्थित थे। इसके साथ वहॉ मौजूद थे महाराओ कोथ और उनका बेटा, महाराजा ऑफ दतियॉ[17], महाराजा रणजीत सिंह जी, जेम आफ नवानगर, क्रिकेट क्षेत्र के रणजी, पालनपुर के नवाब, महाराजा राणा आफ वांकानेर, राणा ऑफ दॉते, लौहारू के नवाब, अलीपुर के रावो साहब, महामना पंडित मदन मालवियॉ, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के वाईस–चांसलर, सर भुपेन्द्र नाथ मित्र जो बाद में लंदन में भारत के हाई कमिश्नर बने, आर.एस.दास भारत सरकार के कानून के सदस्य वहॉ पर उपस्थित थे। ब्रिटिश अफसर भी वहॉ आऐ और उन्होनें वहॉ पर अपने प्रतिनिधि भेजे सर मैल्कोम हैले, पंजाब के गवर्नर सर कलीमैंट हैले, रेलवे बोर्ड के प्रधान भी वहॉ आऐ थे। वायसराय के साथ उनके राजनैतिक सैक्रेटरी मिस्टर सी.सी वाटसन भी आऐ थे। महाराजा को दुख इस बात का हुआ कि उनके अपने अध्यापक सर ब्राईन ईगरटन जो उसे बहुत प्यार करते थे बुरी सेहत की वजह से वहॉ न आ सके। सर फिलिप गरे ईगरटन जो कि परिवार के मुख्य सदस्य थे जो कि इस उत्सव में वहॉ आऐ।[18]

इस विशाल महाअनुभावों की सभा में लार्ड ईरविन ने फल्लड–गेट खोले जिन्होनें राज्य को पानी और सम्पंता देनी थी। वहॉ राजा उस दिन बड़ा मान महसूस कर रहे थे। 1899 में सूखे की त्रासदि देखने पर उनका यह 28 वर्षों का सपना पूरा हुआ। रास्ता आसान नहीं था, विरोध पर विरोध हो रहे थे, आखिरकार इन विरोधों को कुचलना ही पड़ा मुश्किलों को जीतना पड़ा, पैसा–रूपया ईकट्ठा करना पड़ा और बहुत से कार्यों को करना पड़ा। एक समय तो राजा को यू लगा कि शायद उनके जीवन काल में यह योजना पूरी नहीं होगी। बीस परियोजनाओं के बाद इस परियोजना को मनजूरी मिली। लेकिन महाराजा गंगा सिंह जी ने हिम्मत नहीं छोड़ी अथाह, अनंत सबर, कार्य योजना का अध्ययन पूॅजी पैसों का इंतजाम, जमीन और ऐसे बहुत से कार्यों को उन्होनें किया था। जब परिणाम यह निकला कि यह बीकानेर का मरूस्थल उपजाऊ भूमि में बदल गया और पानी से खेत को जोत कर फायदा उठाया गया। यह सारी परियोजना एक बहुत बड़ी विजय थी। जमीन के छोटे–2 हिस्से पहले ही बेच दिए गए थे। यह क्लोनी महाराजा के नाम पर रखी गई, हैड क्वाटर बनाया गया, मंडियॉ बनाई गई, गॉव बसाऐ गए। रेल्वे लाईने और सड़के बनी, जरूरी संस्थाऐं बनी किसान सिर्फ पानी का इंतजार कर रहा था कोई देरी न हुई। प्रत्येक वस्तु बड़ी ठीक से योजना में आई जब पानी पक्की नहर में आया, एक नए जीवन का सृजन हुआ। यह सब ऐसे लगा कि जैसे कि एक जादू हुआ हो और मरूस्थल की जमीन जिस ने कभी भी चलते हुए पानी का संगीत न सुना था[19], वह जीवित हुई वहॉ गंग क्नाल कलोनी बन गई।

इर्विन असेंब्ली हॉल, बीकानेर

यह कोई छोटा क्षेत्र नहीं था, यह क्षेत्र एक हजार वर्ग मील में विस्तरित था, जिस को पानी मिला, वास्तव में एक नया राज्य ही बन गया, जिस की आधुनिक रूप रेखा थी। इसनें बीकानेर राज्य की आर्थिक अवस्था को बहुत प्रभावित किया। अब सूखे का डर नहीं रहा । अब वर्षा पर निर्भरता नहीं रही और अब अपना रेल्वे था, जो अनाज को कहीं पर भी लेकर जा सकता था। 1899–1900 में महाराजा ने यह कसम खाई थी कि अगर उन में शक्ति हुई तो वह बीकानेर को सूखे के भयानक दैत्य से बचाऐंगे [20] और लोगों को असुरक्षा की भावना से बचाऐंगे। वह उम्मीद भी नहीं लगा सकते थे कि उनका सपना पूर्ण रूप से पूरा होगा और उन्हें इस बात का मान हुआ कि उनके जीवन काल में वह इस महान् जिम्मेवारी को निभा पाऐ।

इस योजना ने महाराजा गंगा सिंह जी के सपनों को पूरा किया चाहे उस समय में मूल्यों में काफी गिरावट आई थी, लेकिन गंग कनाल कलोनी ने उन्नति की थी। 299 लाख जो खर्चा हुआ उस में से जमीन की विक्वाली से 280 लाख रूपये वापिस आ गए थे। इस तरह खर्चा लगभग पूरा हुआ और राज्य पर कोई दबाव न पड़ा। उसके बावजूद कि मूल रूप से खर्चा बढ़ा और आमदनी

घटी। इस नहर ने राज्य के लिए 10 लाख का फायदा दिया। 1934–35 में जब कि बुरा समय था, नहर ने 3.77ः लाभ दिया पिछले 9 वर्षों में जो कि मंदी का समय था, इस नहर ने अच्छी आमदनी दी थी।

Financial details of the gang canal [20]

Average Kharif area to be irrigated in acres	136000
Average Rabi area to be irrigated in acres	240000
Total area to be irrigated annually acres	376000
Total gross commanded for irigation acres	620000
Capital expenditure according to revised stimate of 1926.	
Net cost of main canal, branches and distributaries	22189590
Net cost of Head works	5350000
Total	27539590
Capital receipts	-RS-
Estimated sale proceeds of un-occupied waste	47500000
Nazrana of occupancy of properetary rights given of irrigation	11800000
Total	59300000
Net capital receipts after deducting	31760410
Capital expenditure	
Estimated annual land revenue and under rates	3800000
Less-existing land revenue demand	160000
Annual receipts	3640000
Deduction on working expenses	500000
Net Annual receipts	3140000
Add receipts from interest at 6% on net capital receipts	1905625
Total	5045625
Percentage of return on capital	
1. Excluding capital receipts	12%
2. Including intest at 6% on gross capital receipts	18%

जब से नहर बनी 500 नए चक्क बने और वह योजनाबंद तरीके से बने कि उन में अच्छी सड़के भी थी, पीने के पानी के लिए कुंऐं भी थे और वहॉ चक्क के लोगों की और भी जो आवश्यकताऐं थी, वह भी वहॉ पाई जाती थी। जैसे–2 जनसंख्या बढ़ी 1921 में जो 28,000 थी वह बढ़कर 1931 में 1,45,259 तक पहुॅच गई, जो 1934 में 1,80000 हो गई थी। इस जनसंख्या की वृद्धि और खेती की उन्नति ने मंडियों को जन्म दिया जहॉ जो कि मशहूर व्यापारिक शहरों में बदल गई। इसमें सब से ज्यादा स्मृद्धि श्री गंगानगर ने की थी, जो कि महाराजा गंगा सिंह के नाम पर स्थापित हुआ, चाहे यह 6 वर्ष पुराना था इसका मुकाबला पंजाब की शहरों व मंडियों से किया जाने लगा। जनसंख्या व्यापार और उद्योग के मामले में इसके साथ ही बहुत सी उद्योगिक उन्नति भी हुई चार जिनिंग फैक्ट्रीयॉ, तीन ड्रेसिंग फैक्ट्रीयॉ, दो चीनी के फैक्ट्रीयॉ उस नहरी ईलाके में स्थापित हुई। लगभग एक दर्जन आटे की मीले और बहुत से तेल निकालने वाले छोटे उद्योग भी बने थे। यह सब सिर्फ शहरों में ही सीमित नहीं था बल्कि गावों में भी तेल निकालने वाले छोटे उद्योग और आटे की मीलें भी लगाई गई थी।[21]

महाराजा की सरकार ने नहर के खुलने के साथ आराम नहीं किया। महाराजा ने इस बात को पहचाना कि राज्य को किसानों की सहायता करनी पड़ेगी। उनके लिए आधुनिक वैज्ञानिक सहायता के साथ, उस नहर के क्षेत्र में महाराजा की उम्मीदों के साथ तरक्की करनी थी। 1928 में नहर के खुलने के एक वर्ष पश्चात महाराजा ने गंगानगर में एक प्रयोगशाला भी बनवाई, जिस में फसलों व वैज्ञानिक प्रयोग किए जाने लगे थे । बहुत मूल्यवान प्रयोग हुए बीजों की किस्मों के साथ और किसानों को मुफत में इन नतीजों का फायदा दिया गया था।

एक ऐग्रीकलचर फार्म की भी स्थापना हुई जिस से किसानों को अच्छी किस्म को अच्छी–2 किस्मों के बीज दिए गए थे। एक कपास की प्रयोगशाला जो कपास के बीजों पर प्रयोग करती थी। सरकार की इन क्रियाओं ने किसानों को फायदा दिया और उनकी भूमि में पर एकड़ उपज में काफी मात्रा में बढ़ोतरी हुई थी। कलोनी में आसान (लोन) कर्जा की व्यवस्था की गई जिसमें कोप्रेटिव सोसाईटीज भी बनाई गई थी जो सरकार की सहायता से चलती थी और आसान किस्तों पर कर्ज देती थी। एक ही समय में एक हजार वर्ग मील के क्षेत्र में खेती में लाने के प्रयत्न किए। इस क्षेत्र की जनसंख्या 28000 से सात वर्ष में 1,80000 तक पहुॅची, इससे भी एक नए राज्य का विस्थार हुआ। प्रशासनिक समस्याऐं जो महाराजा के सामने आई उसने सरकार पर दबाव डाला और महाराजा ने उन में अपनी दिलचस्पी दिखाई। एक ही समय में शिक्षा, सफाई व्यवस्था, कानून और न्याय व्यवस्था और मंडियों का नियंत्रण जैसी समस्याओं को लिया गया। बहुत से लोग पंजाब से आऐ थे, वहॉ पर पहले ही डनदबपचंस ैमसि ळवअजण थी। उनको आदत थी अपने ही जरूरी कार्य को करने की, जिले के जो कार्य थे उनके लिए जिला बोर्ड बने हुए थे। महाराजा गंगा सिंह जी ने बड़ी उदारता बुद्धिमता से लोगों पर राज किया था।[22] उन सिद्धांतों का पालन करते हुए जिन के लोग स्वभाविक बन चुके थे, जो मुख्य–2 शहर थे वहॉ पर डनदबपचंसपजपमे का चुनाव किया गया, जिन को वह सभी शक्तियॉ दी गई, जो कि साथ के ब्रिटिश क्षेत्रों में दी जाती थी । एक जिला बोर्ड की भी स्थापना की गई थी। ब्रिटिश इंडियन मॉडल पर आधारित और इस ने अपने हाथ में कुछ योजनाऐं (स्कीमें) ली जो स्कूल खोलने, गॉव में सड़कें बनाने के लिए बोर्ड ने महतवपूर्ण गॉवों में 30 स्कूल बनाऐ थे। सरकार ने श्री गंगानगर में हाई स्कूल खोल दिया और गांवों में प्राईमरी व मिडल स्कूल खोल दिये। इस प्रकार कैनाल क्षेत्र की चारों तहसीलों में डिस्पैंसरीज खुली और मुख्य क्षेत्र गंगानगर में हस्पताल खुला। शुरू से ही महाराजा ने ऐसा महसूस किया कि नहरी क्षेत्र के प्रशासन के लिए और उसकी समस्याओं को सुलझाने के लिए एक स्पैशल अफसर की नियुक्ति की जाऐ । जिस से क्लोनी के प्रशासन चलाने में काफी निपून्ता हो इसलिए उसने क्लोनाईजेसन मंत्री की एक स्पैशल नियुक्ति भी की थी। चाहे मुकाबला करना उचित नहीं लेकिन फिर भी ब्रिटिश क्षेत्र और भावलपुर राज्य जिस को कि इसी नहर से पानी मिलता था। उन्होनें सिंचाई के क्षेत्र में उतनी उन्नति नहीं की जितनी कि बीकानेर ने की थी। भावलपुर की बहुत सारी जमीन जो कि सिंचाई के लाईक थी उसको बेचा नहीं गया और ब्रिटिश क्षेत्र में मंडी ने इतना बुरा हाल किया कि इस योजना को कोई भी सफलता न मिल सकी। बीकानेर में चाहे कपास व गन्ने की बिजाई के समय पानी की कमी होती थी और यह पानी की कमी जो होती थी वह 1929 से 1932 तक महसूस की गई थी[23], चाहे अनुमानित खर्चा आधा बढ़ गया था लेकिन फिर भी किसानों के लिए यह योजना बहुत ही लाभदायक सिद्ध हुई थी। मंदी के बुरे दिनों में भी जब कर्जो को माफ व समाप्त किया जाने लगा तो क्लोनी में जमीन की मांग थी ओर राजा और सरकार की समस्या को समझते हुए किसानों ने दिल नहीं छोड़ा।

राजा कभी भी अपनी प्राप्तियों से संतुष्ट नहीं थे, चाहे राजा ने हजार वर्ग मील में सूखी जमीन की प्यास बुझाई लेकिन उसकी चाह समाप्त नहीं हुई थी कि वह ओर प्राप्तियॉ करें। अभी सतलुज वैली योजना पूरी हुई ही थी कि राजा ने बिलासपुर में भाखड़ा डैम के पानी का इस्तेमाल करने की कोशिश की थी। जिस से राज्य के उत्तरी क्षेत्र में और 2000 वर्ग मील क्षेत्र को पानी मिलता। जहॉ तक बीकानेर का सम्बन्ध है, सतलुज वैली योजना से भी ज्यादा खर्चे की सम्भावना है इस पर एक तो गंग कनाल क्लोनी से क्षेत्र दुगना हो जाऐगा। हैड वर्कस पर खर्चा होगा बिलासपुर राज्य को पैसा देना पड़ेगा। महाराजा जिस ने कि पिछले वर्ष 1936 में अपने अंत आंतरिक कर्ज को पूरा चुका दिया था। वह इस योजना के ऊपर भी पैसा लगाने में सक्षम थे।

यह योजना अब भी पूरी नहीं हुई थी लगता है कि इस पर अभी कुछ ओर वर्ष लगेंगे लेकिन जब भी यह कार्य हाथ में लिया गया तो बीकानेर राज्य इस में पूरी भागीदारी रखेगा। महाराजा की इच्छा थी कि उनके जीवन काल में ही यह योजना पूरी हो। कल्पना में महाराजा एक ऐसा दृश्य देखते थे जिस में उन्नत शहर हो, सम्पन्न गॉव हो, कारखाने हो, क्लोनीज हो और मेहनती किसान हो। उस जगह जहॉ हजारों वर्ष पहले रेतीले मारूस्थल थे वहॉ बहुत दूरी तक कोई भी वृक्ष दिखाई नहीं देता था, मनुष्य जीवन की संभावना ही नहीं उन गावों में जो कि सिर्फ मौसम पर निर्भर रहते थे।[24] जीवन की आवश्यकताऐं वहॉ बहुत कम थी। यहॉ तक कि पशु भी गर्मी के कारण और चारे की कमी के कारण वह पानी की कमी के कारण दुखी हो जाते थे। एक महाराजा का इससे महान् सपना क्या हो सकता था कि वह सूखे बंजर क्षेत्र को लह लहराते हरे भरे खेतों में बदल दे। जहॉ वह खुशहाल किसान जीवन का आनंद ले सके।

पुराने हिन्दु परम्पराओं से भरी हुई, एक हिन्दु राजा की कहानी है भागीरथ जिसका नाम था, जिसने पूरा जन्म लगा दिया गंगा को स्वर्ग से लाने में, बहुत ईमानदारी और सबर के साथ उसने नदी की देवी का मन जीता, जिन्होनें हिन्दुस्तान की वादियों में पानी देने में सहमति दी बिना शक के यह एक प्राचीन सिंचाई व्यवस्था का प्रतीक था।

जिसमें पवित्र और सफलतापूर्वक कोशिशें की गई थी, गंगा के पानी को सिंचाई के कार्य में लगाने के लिए। इस प्रकार (महाराजा गंगा सिंह) भागीरथ का नाम एक देव के रूप में जाना जाता है, [25] जो पवित्र नदी का पानी लोगों तक लेकर आऐ थे, इस में कोई भी हैरानीपूर्वक बात नहीं कि बीकानेर के लोग महाराजा गंगा सिंह जी के प्रति सदैव वही आदर सम्मान दर्शाते रहेंगे, जो कि उन्होनें भागीरथ के प्रति लोगों ने महसूस किया था। गंगा सिंह जी जो बहुत दूरी से बीकानेर में पानी गंग नहर के द्वारा लेकर आऐ इस सूखे रेगिस्तान की प्यास बुझाने के लिए और रेगिस्तान को हरे भरे खेत ख्लयानों में बदलने के लिए।

महारानी ईमप्रैस ने महाराजा गंगा सिंह जी की बीकानेर के प्रति दी गई अथाह व अनथक सेवाओं के प्रति उनकी काफी प्रशंसा की थी। इस कार्य के लिए खुश होकर महारानी ने गंगा सिंह से खुश होकर 'केशर–हिन्द' के स्वर्ण–पदक से उनको सम्मानित भी किया था। महाराजा गंगा सिंह जी ने 1899 से 1900 में भारी अकाल के दौरान बीकानेर के प्रति काफी सेवाऐं भी निभाई थी इन सेवाओं के प्रति भी महारानी ने काफी प्रशंसा की थी। महाराजा गंगा सिंह जी को अधिराज, राजराजेश्वर, नरेन्द्र श्रिोमणि, महाराजा गंगा सिंह बहादुर की उपाधि से भी निवाजा गया था। उस वक्त लार्ड कर्जन, जो कि उस वक्त अकाल विभाग के अफसर थे, ने महाराजा के साथ अपना मित्रतापूर्वक व्यवहार करते हुए इस भारी अकाल का सामना बड़ी उत्साह वह कौशल शक्ति के साथ किया था।[26]

बीकानेर राज्य के विकास में गंग नहर द्वारा बीकानेर राज्य के उत्तरी भाग के जल कष्ट को दूर करने के लिए उसे पंजाब के समान उपजाऊ बनाने का इनका यह भागीरथ प्रयत्न केवल प्रशंसा के योग्य ही नहीं बल्कि अनुकरणीय भी है। बीकानेर में अभूतपूर्व उन्नति और अनुपम शोभा जो इस समय नजर आती है वह उसका श्रेय भी महाराजा सर गंगा सिंह जी को है। महाराजा गंगा सिंह जी के (पंजाब के) पटियाला के महाराजा भूपेन्द्र सिंह जी और कपूरथला के महाराजा जगजीत सिंह जी के साथ भी अच्छे–गहरे मित्रतापूर्ण संबंध स्थापित हुए थे। इन दोनों के मित्रतापूर्वक संबंध होने से राजपूत–सिक्ख संबंधों में भी काफी मजबूती आई थी। पटियाला के महाराजा व कपूरथला के महाराजा ने भी गंग नहर के कार्य को सफल बनाने में महाराजा गंग सिंह जी का काफी साथ दिया था।

गंगा सिंह जी ने जब गंग नहर का निर्माण किया तो, उन्होनें लोगों को यहॉ बीकानेर के इस नए आबाद हुए क्षेत्र में आने व रहने के लिए उत्साहित किया था। वहॉ पर बहुत बड़ी जनसंख्या में लोगों ने आकर रहना शुरू कर दिया था। उनमें से वह सिक्ख परिवार थे, जो कि ज्यादातर भूमि मालक थे, जो 1928 ई. में पंजाब से बीकानेर के क्षेत्र में स्थानान्तर हुए थे।[28] यहॉ आकर उन्होनें यहॉ निवास स्थान बना कर रहना शुरू कर दिया था।

वह यहॉ पर तब आऐ जब महाराजा गंगा सिंह जी गंग नहर का निर्माण करवा रहे थे। इसमें सिक्ख समुदाय के लोग तो पंजाब से स्थानान्तर हुए थे, लेकिन हिन्दू परिवार लोग यहॉ के असली निवासी ही थे, वह कोई बाहर से नहीं आऐ थे। उनमें से कुछ लोगों को छोड़ कर बाकी सारे बीकानेर राज्य के ही रहने वाले थे।

जब गंग नहर के आस–पास का क्षेत्र आबाद हुआ तो सिक्खों को वहॉ पर आकर रहने और बिना भेद–भाव के भूमि दी गई थी। इस भूमि की पैमाईश करके नक्शे बनाऐ गए और नए–2 चक्क काटने का कार्य शुरू किया गया था। महाराजा के कार्य शैली का एक और महत्वपूर्ण गुण यह था कि उन्होनें जिस 1000 स्केयर मील के हिस्से को पानी देना था, उस क्षेत्र को बड़ी बारीकी से अध्ययन किया गया। इससे पहले कि इस पक्की नहर में पानी छोड़ा जाता। यह सब कार्य उन्होनें राज्य के वाणिज्य मंत्री मिस्टर रूडकिन की सहायता से किया था।[28] इस सारे क्षेत्र का सर्वे 1921 से 1924 तक हुआ। गंग नहर के आस–पास के क्षेत्र को 25 बीघा के चौहखाना में बॉटा गया था। जिस में प्रत्येक बीघा की लम्बाई 825 फुट थी। पुराने रहने वाले लोग जो कि महाराजा के किरायेदार थे, उनको एक छोटी सी रक्म नजराना के रूप में देने का प्रवधान किया गया चुँकि वह किसी की तरह अपने आप को महाराजा के नए खरीददारों के सामने तुच्छ न समझे। यहॉ तक कि जो लोग शुरू से ही इस जगह पर रह रहे थे, उनसे यह पैसे नहीं लिए गए थे। इस सारे क्षेत्र को 913 चक्क में बॉटा गया। जिस में से 495 चक्क पुराने रहने वाले लोगों को दिए गए थे।[29], बीकानेर के इस क्षेत्र के लिए परिश्रम किया था। ''दी हिन्दुस्तान टाईमज'' समाचार पत्र में इस बुद्धिमता और महान् कार्य के लिए तारीफ की गई थी। जिस की भूमि जो लगभग 98 बीघा थी उसे पानी के नाले के क्षेत्र के साथ ईकट्ठा जोड़ दिया था।

महाराजा गंगा सिंह जी तो गंग नहर प्रोजेक्ट पर अपने खजाने से पैसा खर्च करना चाहते थे, बिना भारत सरकार की सहायता से चुँकि भारत सरकार उसके राज्य में, इस कार्य सम्बन्धी कोई दखल–अंदाजी न दें। इस कार्य हेतु उन्होनें लोन लिए जो कि एक महान् सफलता सिद्ध हुए। फिर उन्होनें 1923 में जो 418 चक्क बचे थे उनको बेचा। सिचाई से पहले पहले कुछ चक्क को निलामी से बेचा गया था और शेष को निश्चित मूल्य पर बेचा गया था। 25% राशि तभी ले ली गई थी जब कि शेष पैसा 8 किस्तों में लिया जाना तय हुआ था।[30] यह चक्क सिर्फ मेहनत करने वाले किसानों को ही दिए गए थे। जिन लोगों को महाराजा राज्य की रीड की हड्डी मानते थे।[31]

प्रत्येक चक्क उन लोगों को दिए गए जो आपस में रिश्तेदार लगते थे अथवा वह आपस में एक दूसरे से जुड़े हुए थे या फिर वह एक दूसरों को अच्छी तरह व भलीभांति जानते थे, चुँकि आने वाले समय में झगड़ों की संभावना समाप्त हो जाऐ।[32] इसके साथ ही, इस क्षेत्र को सेना के लिए महाराजा ने बीकानेर रेलवे की 160 मील लम्बी एक रेलवे लाईन बनाई, जो एक लूप के रूप में यह हनुमानगढ़ के द्वारा गंगानगर, करणपुर, रायसिंह नगर और सूरतगढ़ के बीच में से होकर जाती थी।

उपरोक्त अध्ययन से यह सिद्ध होता है कि बीकानेर राज्य के अंदर नए चक्क बनाऐ गए थे और महाराजा गंगा सिंह जी द्वारा गंग नहर का निर्माण किया गया था। पहले पहल तो बीकानेर एक बिल्कुल ही बीरान एवं सूखा मरूस्थल था लेकिन जब महाराजा गंगा सिंह जी के कार्यकाल में इस ओर ध्यान दिया गया तो महाराजा गंगा सिंह जी ने अपनी कई वर्षों की लिखा–पढ़ी के पश्चात् पंजाब, भावलपुर राज्य के लिए सतलुज

नदी से एक नहर लाने के सम्बन्ध में ई.सं. 1920 तारीक 4 सितम्बर (वि.सं. 1977 भाद्रपद वदि 6) को एक इकरारनामा हुआ, जिसके अनुसार नहर बनकर सम्पूर्ण होने पर ई.सं. 1927 ता. 26 अक्तूबर (वि.सं. 1984 कार्तिक सुदि 1) को भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड ईर्विन द्वारा बड़े समारोह के साथ इसका उद्घाटन करवाया गया। इस शुभ अवसर पर महान पंडित मदन मोहन मालवियॉ भी उपस्थित थे और वरूण पूजा इत्यादि धार्मिक कार्य सब उनकी सम्मति के अनुसार हुए थे। वह गंगनहर फिरोजपुर कंटोन्मेट के पास सतलुज नदी से निकाली गई थी और पंजाब से होती हुई यह बीकानेर राज्य में प्रवेश करती है। राज्य में प्रवेश करने के पश्चात यह गंगानगर, पदमपुर, रायसिंह नगर और सरूपसर के पास होती हुई यह अनुपगढ़ तक पहुंच गई थी तथा इसकी शाखाऐं उत्तरी पश्चिमी भाग में दूर–2 तक फैली हुई थी। मुख्य नहर की लम्बाई फिरोजपुर से गंगानगर तक 85 मील थी। इसे बनवाने में राज्य के 3 करोड़ रूपये खर्च हुए थे। 1931 ई. पू. में खरीफ व रबी क सम्मिलित फसलों में 351247 एकड़ भूमि इसके द्वारा सींची गई थी इसके बनने से राज्य की आय में भी काफी वृद्धि हुई थी। महाराजा गंगा सिंह जी का बीकानेर के लिए यह भागीरथ प्रयत्न राज्य के लिए बड़ा ही लाभदायक हुआ था। महाराजा गंगा सिंह जी ने बीकानेर राज्य की इस मरूभूमि को हरे–भरे खेत–ख्लयानों में बदल दिया था। इस प्रकार यहॉ की भूमि काफी उपजाऊ हो गई थी।

महाराजा ने भूमि की पैमाईश भी करवाई थी और इस नहर के आने से जो क्षेत्र आबाद हुआ था वहॉ पर नए–2 चक्क काटे गए और वहॉ के लोगों को और जो पंजाब क्षेत्र से सिक्ख समुदाय व अन्य जातियों के जो लोग आऐ थे उनको चक्क काट कर दिए गए और उनको मालिकाना हक भी दिया गया था। इसी नहर के नाम पर एक गंग नहर क्लोनी भी इन लोगों के रहने के लिए बनाई गई थी। इस नहर के समीपवर्ती भू–भाग में दूर–2 तक कृषि कार्य शुरू हुआ और नए–2 चक्कों के निर्माण से गावों का विकास होता चला गया। आबादी दिन प्रतिदिन बढ़ती गई और श्री गंगानगर, करणपुर, पदमपुर, रायसिंहनगर, हनुमानगढ़ व सूरतगढ़ इत्यादि स्थानों पर व्यापारिक मंडियॉ भी बनाई गई थी जिससे बीकानेर राज्य के क्षेत्र में व्यापार में भी काफी वृद्धि हुई थी और एक राज्य से दूसरे राज्य (पंजाब) के साथ भी व्यापार संबंधी आदान–प्रदान चलता रहा था जो आज तक भी सफलतापूर्वक चल रहा है इस बात से हम बिल्कुल भी अनभिज नहीं है।

सन्दर्भ सूची

1. के.एम. पानीकर, हिज हाईनैस दी महाराजा आफ बीकानेर, पृष्ठ 288 पब्लिसिडः– पब्लिसिड बाई आकस फोर्ड विश्वविद्यालय प्रैस (लंडन), 1937
2. वही–पृष्ठ 289–291
3. के.एम. पानिकर, पृष्ठ 292, रिपोर्टस आन दी एडमिनिस्ट्रेशन आफ बीकानेर पृष्ठ 16, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर
4. एस.सी. मिश्रा, प्रोग्रेस आफ ईरी गेशन डयूरिंग दी परीअिड आफ गंगा सिंह, पृष्ठ 37,38 पबिलिसिड बाई, महाराजा गंगा सिंह जी सैनटैनरी सैलीबरेशन कमेटी, जूनागढ़ फोर्ट, बीकानेर–334001
5. के.एम. पानीकर, हिज हाईनैस दी महाराजा आफ बीकानेर, पृष्ठ 296–298 राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर
6. वही, पृष्ठ 296–298
7. वही, पृष्ठ 296–298
8. वही, पृष्ठ 296–298
9. रिपोर्टर्स आन दी एडमिनिस्ट्रेशन आफ बीकानेर फार 1926–27, पृष्ठ 13, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर।
10. वही, 13–16
11. गौरी शंकर हीराचन्द ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास, भाग द्वितीय, पृष्ठ 156, प्रकाशक राजस्थान ग्रन्थागार सोजती गेट, जोधपुर (राजस्थान)।
12. वही, पृष्ठ 157
13. वही, पृष्ठ 158
14. वही, पृष्ठ 159
15. वही, पृष्ठ 160–162
16. रिपोर्टर्स आन दी एडमिनिस्ट्रेशन आफ दी बीकानेर फार 1926–27, पृष्ठ 13–21, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर
17. रिपोर्टर्स आन दी एडमिनिस्ट्रेशन आफ दी बीकानेर फार 1926–27, पृष्ठ 22–27
18. के.एम. पानीकर, हिज हाईनेस दी महाराजा आफ बीकानेर, पृष्ठ 298–301 राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर
19. वही, पृष्ठ 302–308
20. फोर डीकेडीज आफ प्रोग्रैस इन बीकानेर, पृष्ठ 96 राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर ।
21. एफ.एण्ड.पी, बीकानेर प्रैस कटिंगस फ्रोम दी ''हिन्दुस्तान टाईम्स'' दिनांक 29.10.1927, फाईल नं. 10
22. के.एम. पानीकर, हिज हाईनैस दी महाराजा आफ बीकानेर, पृष्ठ 311 राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर ।
23. वही, पृष्ठ 311–313
24. रिपोर्टर्स आन दी एडमिनिस्ट्रेशन आफ बीकानेर फार 1926–27, पृष्ठ 20,21 राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर।
25. वही, पृष्ठ 22, 23
26. रिपोर्टर्स आन दी एडमिनिस्ट्रेशन आफ बीकानेर फार 1926–27, पृष्ठ 48–51 राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर।
27. के.एम. पानीकर, हिज हाईनैस दी महाराजा आफ बीकानेर, पृष्ठ 64 राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर।
28. रिपोर्टर्स आन दी एडमिनिस्ट्रेशन आफ बीकानेर फार 1926–27, पृष्ठ 52–57, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर।
29. रिपोर्टर्स आन दी एडमिनिस्ट्रेशन आफ बीकानेर फार 1926–27, पृष्ठ 17, दी गंग नहर पृष्ठ 4–5, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर।
30. एफ.एण्ड.पी. बीकानेर प्रैस कटिंग फरोम दी ''यूनाईटिड इंडिया एण्ड दी इंडियन स्टेटस'' दिनांक 12.11.1927 फाईल नं. 10 राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर।
31. के.एम. पानीकर, हिज हाईनैस दी महाराजा आफ दी बीकानेर, पृष्ठ 296, पब्लिसिड बाई, आकसफोर्ड विश्वविद्यालय, लंदन (1937)
32. एफ.एण्ड.पी. प्रैस कटिंगस फोर्म दी हिंदूस्तान टाईमस, दिनांक 5.11.27, फाईल नं. 10, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर।
33. फौर डीकेटस आफ प्रोग्रैस इन बीकानेर, पृष्ठ 95, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर।